



# आरत का गाजेट The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (I)  
PART II—Section 3—Sub-section (I)

प्रतिकार से प्रकाशित  
PUBLISHED BY AUTHORITY



लं. 92]

नई दिल्ली, मंगलवार, भार्व 7, 1995/फाल्गुन 16, 1916

No. 92] NEW DELHI, TUESDAY, MARCH 7, 1995/PHALGUNA 16, 1916

वित्त मंत्रालय  
(राजस्व विभाग)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 7 मार्च, 1995  
10/95-सीमाशुल्क

सा.का.नि. 117(अ):—केन्द्रीय सरकार, सीमाशुल्क अधिनियम, 1962 (1962 का 52) की धारा 25 की उपधारा (j) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, यह समाधान हो जाने पर कि लोकहित में ऐसा करना आवश्यक है, लौह और इस्पात मध्यक के विनिर्माण के निए अपेक्षित निवेशों को, जब उनका भारत में आयात किया जाए, सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 (1975 का 51) की पहली अनुसूची के अधीन उन पर उद्ग्रहणीय समरत सीमा शुल्क से और उक्त सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम की धारा 3 के अधीन उन पर उद्ग्रहणीय समरत अतिरिक्त शुल्क स, निम्नलिखित शर्तों के अधीन रहते हुए, छूट देती है, अर्थात्:—

(1) आयातकर्ता को, भारत सरकार के बाणिज्य मंत्रालय की अधिसूचना सं.का.आ. 130(अ) तारीख 1 मार्च, 1995 द्वारा यथा अधिसूचित इंजीनियरी उत्पाद नियांत्रित (लौह और इस्पात मध्य की पूनःपूर्ति) स्कीम के

निवंधनों के अनुसार पूर्वोक्त प्रयोजन के लिए उक्त निवेशों के आयात के लिए, अनुशासन प्राधिकारी द्वारा आवश्यक आयात अनुशासन (जिसमें इसके पश्चात् उक्त अनुशासन कहा गया है) अनुदंत की गई है और उक्त अनुशासन, निकासी के समय समर्चित सीमाशुल्क अधिकारी द्वारा विकलन के लिए प्रस्तुत की गई है;

(2) आयातकर्ता, ऐसे प्ररूप में ऐसी राशि के लिए जो अनुशासन प्राधिकारी द्वारा विनिर्दिष्ट की जाए, उक्त अनुशासन की बाध्यताओं और शर्तों को पूरा करने के लिए स्वयं को आबद्ध करते हुए एक वंधपत्र निष्पादित किए जाने का सबूत पेश करता है;

(3) आयातकर्ता, ऐसे प्रतिशु या प्रतिशूति सहित और ऐसे प्ररूप में तथा ऐसी राशि के लिए जो सीमाशुल्क सहायक कलकटर द्वारा विनिर्दिष्ट की जाए, मांग किए जाने पर उत्तीर्ण रकम का, जो यदि इसमें अंतविष्ट छूट न दी गई होती तो ऐसे निवेशों पर, जिनकी आवत इस अधिसूचना में विनिर्दिष्ट शर्तों का अनुपालन नहीं किया गया है, उद्ग्रहणीय शुल्क के बराबर हो, संदर्भ करने के लिए स्वयं को आबद्ध करते हुए एक वंधपत्र निष्पादित करता है।

(4) आयातकर्ता, इंजीनियरी उत्पाद नियांतकर्ताओं को लौह और इस्पात मध्यक के प्रदाय से संबंधित बाध्यता को पूरा करने के लिए अनुज्ञात अवधि की समाप्ति से तीस दिन को अवधि के भीतर या ऐसी बढ़ाई गई अवधि, जो सीमाशुल्क सहायक कलक्टर अनुज्ञात करे, के भीतर सीमाशुल्क सहायक कलक्टर के समाधान प्रद रूप में बाध्यता का निर्वहन करने संबंधी अनुज्ञापन प्राधिकारी से एक प्रमाण-पत्र साक्ष्य के रूप में प्रस्तुत करता है;

(5) इस प्रकार आयातित निवेशों का उपयोग लौह और इस्पात मध्यकों के विनिर्माण के लिए या ऐसे विनिर्माण के लिए पहले से ही प्रयुक्त निवेशों की पृष्ठपृष्ठि के लिए किया जाता है और इस प्रकार आयातित निवेशों का कोई भाग अंजाग्न नहीं किया जाएगा, किसी अन्य भौति से उधार नहीं दिया जाएगा, विक्रय या व्ययन नहीं किया जाएगा और आयातकर्ता, सीमाशुल्क सहायक कलक्टर के समाधान प्रद रूप में इस प्रकार आयातित निवेशों के उपयोग का लेखा प्रस्तुत करता है;

(6) प्रदाय किए गए लौह और इस्पात मध्यकों का विनिर्माण उत्पाद शुल्क नियम, 1994 के नियम 57क के अधीन निवेश प्ररूप प्रत्यय का फायदा लिए बिना किया गया है;

(7) आयात मूस्वई, कलक्टरा, कोचीन, कांडला, बंगलौर, मारसागाव, मद्रास, नवाशिबा, पाण्डीप, तूसीकोरीन और विशाखापल्नम स्थित समुद्री पत्तन के माध्यम से या अहमश्वाबाद, बंगलौर-मूस्वई, कलक्टरा, दिल्ली, जयपुर, वाराणसी, श्रीनगर, किवेन्द्रम, हैदराबाद और मद्रास स्थित विमानपत्तनों के माध्यम से या बंगलौर, कोयम्बतूर, दिल्ली, गुवाहाटी, मुरादाबाद, लुधियाना और हैदराबाद स्थित अन्तर-देशीय आधान छिपों के माध्यम से किया जाता है;

परन्तु सीमाशुल्क कलक्टर, विषेष आदेश द्वारा और ऐसी शर्तों के जो यह विनिर्दिष्ट करे, अधीन रहते हुए, किसी अन्य समुद्री पत्तन, विमानपत्तन या अन्तरदेशीय आधान छिपों के माध्यम से या किसी भूमि सीमाशुल्क स्टेशन के माध्यम से आयात की अनुज्ञा दे सकेगा।

स्पष्टीकरण :—

इस अधिसूचना में,—

(i) "इंजीनियरी उत्पाद" में आईओ सन्नियमों में नियात उत्पाद समूह "इंजीनियरी उत्पाद" के अधीन विनिर्दिष्ट नियात मद्दें (लौह, इस्पात, लौह-भिश्वशातु और उच्चताप सह-प्रत्यय से भिन्न) अभिप्रेत हैं और जिनका पहले ही नियात किया जा चुका है।

(ii) "आईओ सन्नियम" में भारत सरकार के वाणिज्य मंत्रालय की समय-समय पर यथा संशोधित मार्वजनिक सूचना सं. 121 (पी.एन.) 92/97, तारीख 31 मार्च, 1992 द्वारा प्रकाशित प्रक्रिया पुस्तिका, (जिल्द 2) में यथा-अंतर्विष्ट मानक निवेश-उत्पादन और मूल्य परिवर्धन सन्नियम अभिप्रेत है।

(iii) "निवेश" से आईओ सन्नियमों में आयात मद्दें के रूप में विनिर्दिष्ट और लौह और इस्पात मध्यक के विनिर्माण के लिए अपेक्षित कञ्ची सामग्री, संषटक, मध्यक और खपने वाली सामग्री अभिप्रेत है।

(iv) "लौह और इस्पात मध्यक" से अभिप्रेत है आईओ सन्नियमों में नियात उत्पाद समूह "इंजीनियरी उत्पाद" के अधीन "लौह, इस्पात, लौह-भिश्वशातु और उच्चताप समूह" के अधीन विनिर्दिष्ट नियात मद्दें जिनकी बाबत मूल्य परिवर्तन-आईओ सन्नियमों में विनिर्दिष्ट किया गया है और ऐसी मद्दों का प्रदाय किसी नियातकारी अनुज्ञापन प्राधिकारी द्वारा जारी निर्माचन सूचना पर इंजीनियरी उत्पाद के विनिर्माण में पहले ही उपयोग में लाई गई समरूप मद्दों की पृष्ठपृष्ठि के रूप में किया जाता है:

परन्तु अनुज्ञापन प्राधिकारी द्वारा वहां ऐसी कोई निर्माचन सूचना जारी नहीं की जाएगी जहां—

(क) सीमाशुल्क और केन्द्रीय उत्पाद शुल्क वापसी नियम, 1971 के नियम 6 या नियम 7 के अधीन वापसी का ऐसी मद्दों की बाबत उपयोग नहीं किया गया है; या

(ख) ऐसी मद्दों के लिए शुल्क छूट का फायदा किसी अन्य स्कीम के अधीन उपयोग नहीं किया गया है, या

(ग) इंजीनियरी उत्पादों का ऐसी मद्दों की बाबत 1 अक्टूबर, 1994 से ठीक पहले प्रवृत्त नियम 191क या नियम 191ख के अधीन या केन्द्रीय उत्पाद शुल्क नियम, 1944 के नियम 12(1) (ख) या नियम 13(1) (ख) के अधीन सुविधा का उपयोग करके विनिर्माण किया गया था, या

(घ) ऐसी मद्दों की बाबत केन्द्रीय उत्पाद शुल्क नियम, 1944 के नियम 56क या नियम 57क के अधीन निवेश प्रक्रम प्रत्यय का उपयोग किया गया था।

(5) "अनुज्ञापन प्राधिकारी" से विदेश व्यापार (विकास और विनियमन) अधिनियम, 1992 (1992 का 22) की धारा 6 के अधीन नियुक्त विदेश व्यापार महानिवेशक या उत्पाद अधिनियम के अधीन अनुज्ञित प्रदान करने के लिए उसके द्वारा प्राधिकृत कोई ग्राफिकारी अभिप्रेत है।

(6) "निर्माचन सूचना" से ऐसा निर्माचन आदेश अभिप्रेत है जिसमें आईओ सन्नियमों के अनुसार लौह और इस्पात मध्यकों का नाम, वर्णन और तकनीकी विशेषताएं, उनकी मात्रा और उनका मूल्य उपर्युक्त हो।

[फा. सं. 605/198/94-डी.बी.के.]

ए.के. भद्रान, प्रबन्ध सचिव

MINISTRY OF FINANCE  
(Department of Revenue)

## NOTIFICATION

New Delhi, the 7th March, 1995

No. 10/95-CUSTOMS

**G.S.R. 117 (E).**—In exercise of the powers conferred by sub-section (1) of section 25 of the Customs Act, 1962, the Central Government, being satisfied that it is necessary in the public interest so to do, hereby exempts inputs required for the manufacture of iron and steel intermediates when imported into India, from the whole of the duty of customs leviable thereon under the First Schedule to the Customs Tariff Act, 1975 (51 of 1975), and from the whole of the additional duty leviable thereon under section 3 of the said Customs Tariff Act, subject to the following conditions, namely :—

- (1) that the importer has been granted necessary import licence (hereinafter referred to as the said licence) by the Licensing Authority for the import of the said inputs for the aforesaid purpose in terms of Engineering Products Export (Replenishment of Iron and Steel Intermediates) Scheme as notified by the Government of India in the Ministry of Commerce Notification No. S.O. 130 (E) dated the 1st March, 1995 and the said licence has been produced at the time of clearance for debt by the proper officer of customs;
- (2) the importer furnishes proof of having executed a bond in such form and for such sum as may be specified by the Licensing Authority binding himself to fulfil the obligations and conditions of the said licence;
- (3) the importer furnishes a bond, with such surety or security, in such form as may be specified by the Assistant Collector of Customs binding himself to pay on demand an amount equal to the duty leviable on the said inputs but for the exemption contained herein, in respect of which the conditions specified in this notification have not been complied with;
- (4) that the importer produces a certificate from the Licensing Authority in evidence of having discharged the obligation relating to supply of iron and steel intermediates to the Engineering Products exporters to the satisfaction of the Assistant Collector of Customs within a period of thirty days from the expiry of period allowed for fulfilment of the obligation or within such extended period as the said Assistant Collector of Customs may allow;
- (5) that the inputs so imported are utilised for the manufacture of iron and steel intermediates or for replenishment of inputs already used for such manufacture and no portion

of inputs so imported shall be loaned, transferred, sold or disposed of in any other manner and the importer furnishes an account of the use of the inputs so imported to the satisfaction of the Assistant Collector of Customs;

- (6) that the iron and steel intermediates supplied have been manufactured without availing input stage credit under rule 57A of the Central Excise Rules, 1944;
- (7) that the import is undertaken through the Sea Ports at Bombay, Calcutta, Cochin, Kandla, Mangalore, Matinagao, Madras, Nhava Sheva, Paradeep, Tuticorin and Visakhapatnam or through the Airports at Ahmedabad, Bangalore, Bombay, Calcutta, Delhi, Jaipur, Varanasi, Srinagar, Trivandrum, Hyderabad and Madras or through the Inland Container Depots at Bangalore, Coimbatore, Delhi, Gauhati, Moradabad, Ludhiana and Hyderabad :

Provided that the Collector of Customs may by special order and subject to such conditions as may be specified by him permit imports through any other Sea Port, Airport, or Inland Container Depot or through a Land Customs Station.

**Explanation.**—In this notification,—

- (i) “Engineering Products” means export items (other than iron, steel, ferro alloys and refractories) specified under the export product group “Engineering Products” in the I-O Norms and which have already been exported;
- (ii) ‘I-O Norms’ means the Standard Input-Output and Value Addition norms as contained in the Hand Book of Procedures (Volume II) published vide Public Notice No. 121 (PN) 92-97 dated the 31st March, 1992 of the Government of India in the Ministry of Commerce, as amended from time to time;
- (iii) “inputs” means raw materials, components, intermediates and consumables specified as import items in the I-O Norms and required for the manufacture of iron and steel intermediates;
- (iv) “Iron and Steel Intermediates” means export items specified under sub-group “Iron, Steel, Ferro Alloys and Refractories” under the export product group “Engineering Products” in I-O Norms and in respect of which value addition has been specified in the I-O Norms, and such items are supplied to an exporter as replenishment for similar items already used in the manufacture of the Engineering Products against a Release Advice issued by the Licensing Authority :

Provided that no such Release Advice shall be issued by the Licensing Authority where—

- (a) drawback under rule 6 or rule 7 of the Customs and Central Excise Duties Drawback Rules, 1971 has been availed in respect of such items; or
- (b) benefit of duty exemption for such items has been availed under any other scheme; or
- (c) Engineering Products were manufactured availing facility, under rule 191A or 191B as in force immediately before the 1st October, 1994, or under rule 12(1) (b) or 13(1) (b) of Central Excise Rules, 1944 in respect of such items; or

(d) input stage credit under rule 56A or 57A of the Central Excise Rules, 1944 was availed in respect of such items;

- (v) “Licensing Authority” means the Director General of Foreign Trade appointed under section 6 of the Foreign Trade (Development and Regulation) Act, 1992 (22 of 1992) or an officer authorised by him to grant a licence under the said Act;
- (vi) “Release Advice” means a Release Order indicating the name, description and technical characteristics of the iron and steel intermediates, their quantities and value thereof as per the I-O norms.

[F. No. 605/198/94-DBK]

A. K. MADAN, Under Secy.